1

घर वही जो परमेश्वर को भाए

वचन पाठ: इफिसियों 5:21–6:4

कई साल पहले की बात है, मुझे "पारिवारिक रिश्तों की मज़बूती" पर गोष्ठी में बोलने के लिए कहा गया था। विषय का चुनाव मुझे पसंद आया। मज़बूती की अवधारणा मुझे अच्छी लगी, क्यों हम सब के लिए "प्रेम में सच्चाई से चलते हुए, सब बातों में उस में जो सिर है, अर्थात मसीह में बढ़ना" आवश्यक है (इफिसियों 4:15ख)। मुझे लगा कि रिश्तों पर ज़ोर देना अच्छी बात है, क्योंकि हम सब को लोगों की आवश्यकता होती है (उत्पत्ति 2:18)। इसलिए हमें दूसरों को साथ लेकर चलना आना चाहिए। परिवार के विषय से मुझे इसलिए भी खुशी हुई क्योंकि सामान्य रूप में घर से और विशेष रूप से मेरे अपने परिवार से कीमती कोई चीज़ नहीं है।

मैं मानता हूं कि परिवार के विषय में मुझे समझ नहीं आ रहा था कि पारिवारिक सम्बन्धों की मज़बूती पर क्या प्रचार करूं। अपने घर से दूर होता तो मैं "पारिवारिक सम्बन्धों की मज़बूती और मैंने इसे कैसे पाया" पर बोल सकता था, परन्तु सुनने वालों में से कुछ लोग मुझे जानते थे और मुझे मालूम था कि मैं इससे कभी बच नहीं सकता।

सच कहूं तो मैं घबरा गया था, जब तक मुझे इफिसियों 5 का वह भाग याद नहीं आया, जहां पौलुस ने पति और पत्नी के सम्बन्ध की तुलना मसीह और उसकी कलीसिया से की है। यीशु का नाम ही मज़बूती का दूसरा नाम है। मैंने विचार किया कि मसीह का अपनी आत्मिक देह अर्थात कलीसिया के साथ सम्बन्ध देखकर, हमें थोड़ा सा पता चल सकता है कि मज़बूत रिश्ते का आधार क्या है। इस प्रकार इफिसियों 5 का अन्तिम भाग और इफिसियों 6 का पहला भाग, उस प्रस्तुति के लिए मुझे बाइबल का हवाला मिल गया जो, मुझे बहुत अच्छी लगी और जिसे लोगों ने खूब सराहा।

पाठों की इस विशेष शृंखला का आरम्भ करने पर ध्यान करते हुए मेरे मन में फिर से इफिसियों 5 ही आया। विवाह और परिवार पर शृंखला आरम्भ करने के लिए इससे अच्छे वचन और क्या हो सकते हैं ? मैं इस आरम्भिक प्रस्तुति में माता-पिता और बच्चों सब के लिए टिप्पणियां देना चाहता हूं, इसलिए चलिए इफिसियों 5:21 से आरम्भ करके 6:4 तक पढ़ते हैं:

> और मसीह के भय से एक-दूसरे के आधीन रहो। हे पत्नियो, अपने-अपने पति के ऐसे आधीन रहो, जैसे प्रभु के। क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह

कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने-अपने पति के अधीन रहें। हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। कि उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए। और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिसमें न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो। इसी प्रकार उचित है, कि पति अपनी-अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है। क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, बरन वह उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है। इस लिए कि हम उस की देह के अंग हैं। इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे। यह भेद तो बड़ा है; पर मैं मसीह और कलीसिया के विषय में कहता हूं। पर तुम में से हर एक अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे, और पत्नी भी अपने पति का भय माने।

हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे। और हे बच्चे वालो अपने बच्चों को रिस न दिलाओ परन्तु प्रभु की शिक्षा, और चेतावनी देते हुए, उनका पालन-पोषण करो।

हम इन आयतों की सभी महत्वपूर्ण सच्चाइयों पर बात करना आरम्भ नहीं कर सकते, इसलिए ''घर ऐसा जो परमेश्वर को भाए'' पर चर्चा करते हुए हम कई विषयों को छुएंगे। परमेश्वर को भाने वाले घर की क्या विशेषताएं होनी आवश्यक हैं।

निःस्वार्थपन (5:21)

आप हैरान होंगे कि वचन का हमारा पाठ 22 के बजाय 21 से आरम्भ हुआ। हमें आयत 22 से आरम्भ करना अच्छा लगता है (विशेषकर उन्हें जो पति हैं): ''हे पत्नियो अपने पति के अधीन रहो,'' परन्तु अगली आयतों के रिश्तों की पृष्ठभूमि आयत 21 में मिलती है: ''और मसीह के भय से एक-दूसरे के आधीन रहो।'' हम में से हर किसी को अपने परिवारों में दूसरों का ध्यान अपने से अधिक रखना चाहिए।

यदि आप यह नहीं मानते कि आयत 21 हमारे पाठ का हवाला होनी चाहिए तो इस पर विचार करें: आयत 22 के मूल पाठ में कोई क्रिया नहीं है; क्रिया आयत 21 से ही मिलनी चाहिए। आयत 22 में ''अधीन रहो'' शब्दों का जो अर्थ है, पहले वह आयत 21 में हर मसीही के लिए था (जिसमें पति भी शामिल हैं)। एक-दूसरे के अधीन होने की शिक्षा पूरे नये नियम में सिखाई गई है:

... प्रेम से एक दसरे के दास बनो (गलातियों 5:13)।

तुम एक दूसरे का भार उठाओ (गलातियों 6:2क)।

विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, बरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करे (फिलिप्पियों 2:3, 4)।

... परस्पर आदर करने में एक-दूसरे से बढ़ चलो (रोमियों 12:10ख)।

हमारा सिद्ध आदर्श यीशु ''इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि वह आप सेवा टहल करे ...'' (मत्ती 20:28)।

वचन में यहां ''प्रेम'' पांच बार आया है और हर बार यह *agape* (अगापे) के किसी रूप का ही अनुवाद है। 1 कुरिन्थियों 13:5 में इस प्रेम के लिए कहा गया है कि यह ''अपनी भलाई'' नहीं चाहता।

इन आयतों में बताए गए सम्बन्ध के सही परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए एक-दूसरे के अधीन रहने का नियम हमारे ध्यान में रहना आवश्यक है, जिसमें अपने पति के सामने पत्नी का समर्पण, जो उसे करना चाहिए, उसमें उसकी सहायता के लिए स्वेच्छा से किया गया समर्पण है। अपनी पत्नी पर सिर होने की पति की सरदारी सदा *पत्नी* की खुशी की चाह में खत्म हो जाती है। जे. डब्ल्यू. शैफर्ड ने इफिसियों 5 अध्याय के अन्तिम भाग पर टिप्पणी की है, ''एक-दूसरे से प्रेम और विश्वास इतना होना चाहिए कि पति की इच्छा पत्नी के लिए कानून बन जाए; और पत्नी की इच्छा पति के लिए ऐसा कानून बन जाए, जिसे पति की स्वीकृति हो।''[1]

भय (5:21)

घर में एक-दूसरे के साथ होने वाला रिश्ता मसीही रिश्ता ही हो। आयत 21 आज्ञा देती है कि हम ''*मसीह के भय से* एक-दूसरे के अधीन'' हों। ''भय'' यह ईश्वरीय भय, सम्मान की गहरी किस्म या भक्ति को कहा गया है।

कोई परिवार तब तक वैसा नहीं बन सकता जैसा उसे होना चाहिए, जब तक वह प्रभु को आदर नहीं देता। इसे व्यावहारिक शब्दों में कहें तो इसका अर्थ यह है कि परिवार के हर सदस्य के लिए मसीही यानी एक सच्चा मसीही, विश्वासी मसीही, अर्थात समर्पित मसीही होना आवश्यक है। कितना अच्छा हो अगर पति और पत्नी ईमानदारी से कह पाएं कि वे जीवन के अनुग्रह के साझे अधिकारी हैं! (देखें 1 पतरस 3:7.)

विवाह, घर और परिवार सब परमेश्वर की योजना का भाग हैं और परमेश्वर हमें बताता है कि उस योजना पर काम कैसे करना है। चार्ल्स स्पर्जन ने लिखा है, ''जब घर परमेश्वर के वचन के अनुसार चलता है तो स्वर्गदूतों को हमारे साथ रहने के लिए कहा जा सकता है और उन्हें वह घर अपना सा लगेगा।'' परमेश्वर के वचन के अनुसार न चलने वाले घर का क्या होगा? कवि विलियम काउपर ने घर को ''स्वर्ग की एक मात्र आशीष,

जो गिरने से बच गई है'' कहा है। अफ़सोस कि आज कुछ घर स्वर्ग का पूर्व स्वाद होने के बजाय नरक के प्रहरी हैं।

जैसा कि हम ने कहा है, घर में उस सम्बन्ध के लिए जो उसमें होना चाहिए, *मसीही* सम्बन्ध होना आवश्यक है। कई घरों में हर सदस्य मसीही नहीं होता, इसलिए मैं कुछ सलाह देना चाहता हूं: (1) यदि आप किसी ऐसे घर में मसीह हैं, जहां कुछ लोग मसीही नहीं हैं तो एक मसीही की तरह काम करें, इसलिए नहीं कि दूसरे लोग परमेश्वर की संतान हैं (क्योंकि वास्तव में वे नहीं हैं) बल्कि इसलिए कि आप हैं. (2) यदि आप मसीही नहीं हैं तो अगले दिन मसीही बनने की प्रतीक्षा न करें। (3) यदि आप अभी विवाहित नहीं हैं तो किसी मसीही से ही विवाह करने का मन बनाएं।

ज़िम्मेदारी (5:22-24; 6:1-4)

वचन के हमारे पाठ में मसीही घर के हर सदस्य के लिए परमेश्वर प्रदत्त कुछ ज़िम्मेदारियां दी गई हैं। अगले पाठों में हम उनमें से कुछ ज़िम्मेदारियों पर बात करेंगे, परन्तु अभी के लिए उसकी संक्षेप समीक्षा ही दे रहे हैं।

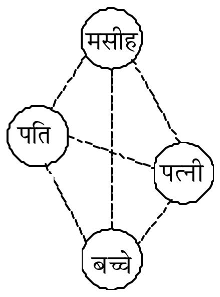

इफिसियों 5:23, 24 स्पष्ट कर देता है कि ''मसीह कलीसिया का सिर है'' और कलीसिया उसके अधीन है। ''स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार'' उसे दिया गया है (मत्ती 28:18)। घर में, पति हो या पत्नी या बच्चे सब को उसके अधीन रहना चाहिए।

इतना ही स्पष्ट यह है कि पति-पत्नी के ऊपर सिर है: ''क्योंकि पति पत्नी का सिर है जैसे कि मसीह कलीसिया का सिर है; और आप ही देह का उद्धारकर्त्ता है। पर जैसे कलीसिया मसीह के आधीन है, वैसे ही पत्नियां भी हर बात में अपने अपने पति के अधीन रहें'' (इफिसियों 5:23, 24)। रेखाचित्र में, पत्नी को मसीह के और अपने पति के अधीन दिखाया गया है।

इन आयतों में यह भी बताया गया है कि घर में बच्चों को अपने माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिए: ''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि उचित है'' (6:1)। इस प्रकार रेखाचित्र में, उन्हें मसीह के, अपने पिता के और अपनी माता के अधीन दिखाया गया है।

परमेश्वर को भाने वाला घर होने के लिए, हर सदस्य को परमेश्वर द्वारा दी गई ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करना आवश्यक है। एक हास्यास्पद बात घर की इस महत्वपूर्ण सच्चाई को बयान करती है:

शांत मुर्गे या कुड़कुड़ाने वाली मुर्गी की तरह
लगने वाले परिवार को कलह नरक बना देती है,
मालूम नहीं अप्राकृतिक जीवन किसका है,
आज्ञाकार पति या रौबदार पत्नी का।

आज यदि हमें इसे आधुनिक बनाना हो तो हम उन घरों की अप्राकृतिक स्थिति जोड़ सकते हैं, जिन्हें बच्चे चला रहे हैं।

परिवार के सिर के लिए मुख्य शब्द ''ज़िम्मेदारी'' है। सिर होना विशेषाधिकार नहीं, बल्कि एक ''ज़िम्मेदारी'' है। पुरुष को सांसारिक और आत्मिक मामलों में अपने घर की अगुआई करने की बड़ी गम्भीर ज़िम्मेदारी दी गई है (देखें 6:4)।

वचन के हमारे पाठ में दी गई ज़िम्मेदारियों का श्रेष्ठता और हीनता/अधीनता से कोई सम्बन्ध नहीं है! बाइबल स्त्री को कभी हीन पेश नहीं करती। नीतिवचन 31 में ''आदर्श पत्नी'' को देखें। वह बहुत योग्य स्त्री थी! वह एक आम व्यवसायी को संगठन, उद्योग, कार्यकुशलता और मानवीय सम्बन्धों के बारे में अच्छी तरह बता सकती थी!

परिवार के सब लोग जब परमेश्वर द्वारा दी गई ज़िम्मेदारियों को मानते हैं तो घर बहुत अच्छा चलता है। इससे घर की सभी समस्याएं अपने आप ही सुलझ तो नहीं जाएंगी, परन्तु यह उस लक्ष्य की ओर बढ़ने के लिए कदम है।

बेशक, सवाल उठते हैं, ''पर यदि घर के कुछ लोग परमेश्वर द्वारा दी गई ज़िम्मेदारियों को स्वीकार करते हों और कुछ नहीं तो क्या करें?'' ''जब वह अपना काम नहीं करता/करती तो मैं अपना काम कैसे कर सकता/सकती हूं?'' पौलुस ने प्रश्नों का उत्तर दिया है। 5:22 में दिए गए ज़ोर पर ध्यान दें: ''हे पत्नियो, अपने-अपने पति के ऐसे अधीन रहो, जैसे प्रभु के।'' यही ज़ोर माता-पिता के साथ बच्चों के सम्बन्ध में 6:1 में दिया गया है, *''हे बालको, प्रभु में अपने माता-पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि उचित है।''* कुलुस्सियों 3:23 में इससे जुड़ी आयत इस विचार को विस्तार देती है: ''और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझ कर कि मनुष्यों के लिए नहीं परन्तु प्रभु के लिए करते हो।''

कलीसिया के लिए मसीह के प्रेम की बात करते हुए पौलुस ने बहुत अच्छा उदाहरण दिया। क्या कलीसिया वैसी ही है, जैसी इसे होना चाहिए? नहीं। इसलिए क्या मसीह यह कहता है कि ''कलीसिया हर बात में मेरे अधीन नहीं होती, असल में कई बार तो यह मेरी विश्वासी भी नहीं होती, इसलिए मैं इसे अपनी स्नेहपूर्ण अगुआई नहीं दूंगा''? क्या वह यह कहता है कि ''मैं कलीसिया से प्रेम करूंगा और उसे आशीष देने के लिए वह सब नहीं करूंगा, जो मैं कर सकता हूं?'' बेशक नहीं।

आपका घर आपकी इच्छा के अनुसार तब तक बिल्कुल नहीं बन सकता, जब तक घर

के सब लोग अपनी-अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा नहीं करते। वे पूरा करें या न करें, आपको वैसे ही बनने की ठान लेनी चाहिए, जैसा परमेश्वर चाहता कि आप बनें।

प्रेम (5:25, 28, 29, 33)

आयत 25 को और इससे अगली आयत को समझने के लिए, हमें पौलुस के समय के संसार की समझ होना आवश्यक है। यहूदी जगत में पत्नियों, विवाह और घर को कागज़ों में तो बहुत ऊंचा स्थान मिला था, परन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं था। सुबह की प्रार्थना करते हुए यहूदी पुरुष परमेश्वर का धन्यवाद करता था कि उसे "अन्यजाति, गुलाम या स्त्री नहीं बनाया गया।"[3] यहूदियों में तलाक बहुत आसान था; पत्नियों को बहुत ही तुच्छ कारणों से घर से निकाल दिया जाता है।

यूनानी जगत तो इससे भी बुरा था। वेश्याएं यूनानी जीवन का अभिन्न अंग थीं। डेमोस्थेनिस ने लिखा है, "भोग-विलास के लिए हमारे पास वेश्याएं हैं; प्रति दिन सहवास के लिए हमारे पास रखैलें हैं; कानूनी रूप से बच्चे जनने और घर के सब मामलों को देखने के लिए ईमानदारी से पहरा देने के उद्देश्य के लिए हमारे पास पत्नियां हैं।"[4]

रोमी जगत तो उससे भी गया गुजरा था। पौलुस के समय तक, रोमी पारिवारिक जीवन पतित हो चुका था। एक रोमी लेखक ने किसी स्त्री के विषय में लिखा है, जिसने पांच साल में आठ पति किए थे, एक आरम्भिक मसीही इतिहासकार ने तेइसवें पति से ब्याही स्त्री के बारे में बताया, जिसकी वह इक्कीसवीं पत्नी थी।

उस ज़माने में मूल रूप में स्त्रियों को कोई अधिकार नहीं था। उनके जीवनों का निर्णय घर के पुरुष ही लेते थे।

इस पृष्ठभूमि के विरुद्ध, पौलुस ने लिखा, "हे पतियो, अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो, जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया" (आयत 25)। पौलुस के समय के चकित पाठक द्वारा मैं यह पूछने की कल्पना कर सकता हूं, "क्या तुम्हारे कहने का अर्थ यह है कि पति की अपनी पत्नी के लिए भी कुछ ज़िम्मेदारियां हैं?" पौलुस कहता है, "बिल्कुल सही, और पहली ज़िम्मेदारी अपनी पत्नी से प्रेम करना है।" प्रेरित ने नहीं चाहा कि हम इस सच्चाई को नज़रअंदाज़ करें, इसीलिए उसने वचन के इस हवाले में तीन बार यह कहा:

> हे पतियो, *अपनी-अपनी पत्नी से प्रेम रखो,* जैसा मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया (आयत 25)।
>
> इसी प्रकार उचित है, कि पति *अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे* (आयत 28क)।
>
> ... तुम में से हर एक *अपनी पत्नी से अपने समान प्रेम रखे* (आयत 33)।

पति अपनी पत्नी से कैसे प्रेम रखे? "वैसे ही, जैसे मसीह ने कलीसिया से किया।"

मसीह ने कलीसिया से कैसा प्रेम रखा (और रखता है) ? बेकदरी करने वाला, बदला लेने वाला, स्वार्थी ''प्रेम''? ऐसा ''प्रेम'' जो यह साबित करने के लिए कि वह ''बॉस'' है, सब नियमों को ताक पर रख देता है ? नहीं! उसका प्रेम तो नि:स्वार्थ प्रेम है; उस महान प्रेम के कारण ही उसने ''अपने आप को कलीसिया के लिए दे दिया।''

28 और 29 आयतों में जोड़ा गया है, ''पति अपनी अपनी पत्नी से अपनी देह के समान प्रेम रखे, जो अपनी पत्नी से प्रेम रखता है, वह अपने आप से प्रेम रखता है, क्योंकि किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा, बरन उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है।'' वास्तव में यीशु ने कलीसिया से अपनी देह से अधिक प्रेम किया क्योंकि कलीसिया को खरीदने के लिए उसने अपनी देह दे दी!

एक आरम्भिक लेखक क्रिसोस्टोम ने इन आयतों पर जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं, ये टिप्पणियां दीं:

> आपने आज्ञाकारिता का माप देखा है ? तो फिर प्रेम का माप भी देख लें। क्या आप चाहते हैं कि आपकी पत्नी आपकी बात वैसे ही माने, जैसे कलीसिया मसीह की मानती है ? तो आप भी उसकी देखभाल वैसे ही करें, जैसे मसीह ने कलीसिया की की। और यदि कहीं आप को उसके लिए जान देनी पड़ जाए, या टुकड़े-टुकड़े होना पड़े, या कुछ और भी सहना पड़े तो इनकार न करें। ... उसने कलीसिया को धमकाकर या डराकर या किसी और तरह से नहीं, बल्कि अपनी बड़ी सम्भाल से अपने पैसे पर उठाया है; आप भी अपनी पत्नी के साथ ऐसा ही करें।[5]

ऐसा प्रेम रखने वाला पति कोई ही होगा, जिसकी पत्नी को उसके अधीन होने में कोई दिक्कत हो!

बेशक ऐसा प्रेम परिवार के *सब* सम्बन्धों में होना चाहिए, यानी पत्नियां अपने पतियों से प्रेम रखें। और बच्चे अपने माता-पिता से प्रेम रखें। पौलुस ने तीतुस को बताया था कि जवान स्त्रियों को सिखाया जाए कि ''वे अपने पतियों और बच्चों से प्रीति रखें'' (तीतुस 2:4)। प्रेम ही घर का सार है।

पवित्रता (5:25-27)

आयतें 25 से 27 हमें लक्ष्य बताती हैं, जिसे मसीह अपनी आत्मिक दुल्हन के द्वारा पाने की कोशिश कर रहा है:

> ... मसीह ने भी कलीसिया से प्रेम करके अपने आप को उसके लिए दे दिया। *कि* उस को वचन के द्वारा जल के स्नान से शुद्ध कर के पवित्र बनाए और उसे एक ऐसी तेजस्वी कलीसिया बनाकर अपने पास खड़ी करे, जिस में न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु हो, बरन पवित्र और निर्दोष हो।

''न कलंक, न झुर्री, न कोई और ऐसी वस्तु'' शब्दों पर विचार करें। यीशु स्वय पवित्र, शुद्ध और कलीसिया के साथ ईमानदार है। वह एक शुद्ध, पवित्र और अपने लिए

ईमानदार दुल्हन चाहता है।

आज हम पर इस संदेश के साथ हमले किए जाते हैं कि ''पति-पत्नी के बीच बेवफाई से विवाह सम्बन्ध में कोई फर्क नहीं पड़ता; बल्कि कई मामलों में तो ये सम्बन्ध और बेहतर होते हैं।'' यह शैतान का फरेब है। विवाह का वही सम्बन्ध बढ़कर मज़बूत हो सकता है, जिसमें दोनों जीवन भर एक-दूसरे के प्रति समर्पित हों, ऐसा सम्बन्ध, जिसमें कोई भी अपने आप को किसी और को न दे और दोनों को बिना किसी शक के *पता* हो कि ऐसा ही होने वाला है।

इब्रानियों की पत्री के लेखक ने यही कहा जब उसने लिखा, ''विवाह सब में आदर की बात समझी जाए और बिछौना निष्कलंक रहे; क्योंकि परमेश्वर व्यभिचारियों, और परस्त्रीगामियों का न्याय करेगा'' (इब्रानियों 13:4)।

विकास (5:26, 27)

आइए, अब 26 और 27 आयतों के अर्थ को थोड़ा और बढ़ाते हैं: मसीह हमें पवित्र और शुद्ध बनाने के लिए हमसे प्रेम करता है, परन्तु हम में वे गुण हैं नहीं। तो हम कह सकते हैं कि हमें प्रोत्साहित करने के लिए कि हमें ऐसे होना चाहिए, यीशु हमसे प्रेम करता है, वैसे बनने के लिए जैसे हमें बनना चाहिए, समय लगता है, यानी इसके लिए *विकास* आवश्यक है।

इस नियम का विवाह और घर से क्या सम्बन्ध ? हम में से अधिकतर लोग विवाह कर लेते हैं, परन्तु फिर विवाह को अपनी ''प्राथमिक'' सूचियों में से निकाल देते हैं। हमने सारी रस्में पूरी कीं, अपने साथी का मन जीतने के लिए पैसा और समय दोनों बर्बाद किए और अब (हमें लगता है कि) हम आगे बढ़ने और जीवन में तरक्की पाने के लिए उन सब को भूल सकते हैं। हमारे एक, या दो से अधिक बच्चे हो सकते हैं, हम मान लें कि अगर हम उन्हें बाइबल सिखाने और आराधना में ले जाएं, तो हमने उनके प्रति अपनी ज़िम्मेदारियों को पूरा कर लिया है।

यह समझना आवश्यक है कि सम्बन्ध मज़बूत होने आवश्यक हैं। घर को घर बनाने के लिए हर कोशिश करनी पड़ती है। परिवार के हर सदस्य को आने वाली हर समस्या का सामना मिलकर और परमेश्वर की सहायता से करके उन समस्याओं का समाधान करना आवश्यक है।

टिकाऊपन (5:31; 6:3)

आयत 31 बहुत प्रसिद्ध आयत है, जो मूलत: उत्पत्ति 2:24 में से यीशु ने मत्ती 19:5 में दोहराई थी: ''इस कारण मनुष्य माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे।'' (मरकुस 10:7, 8 भी देखें।) इस हवाले में कई सच्चाइयां बयान की गई हैं, पर हम केवल एक ही सच्चाई अर्थात विवाह के *टिकाऊपन* पर ज़ोर देंगे।

किसी भी सम्बन्ध में समस्याएं आना अनोखी बात नहीं है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि पति होने के नाते आपको ''अपनी जवानी की पत्नी'' को निकालकर उससे

"धोखा" करना चाहिए (मलाकी 2:14)। न ही तुम पत्नियों को अपने पतियों के साथ ऐसा व्यवहार करना चाहिए। परमेश्वर आज भी तलाक से घृणा करता है (मलाकी 2:16)। यीशु ने घोषणा की, "जिसे परमेश्वर ने जोड़ा है, उसे मनुष्य अलग न करे" (मत्ती 19:6ख)।

अधिकतर बच्चे अन्तत: घर छोड़ जाते हैं (मत्ती 19:5), परन्तु उनके माता-पिता का विवाह बरकरार रहने पर उन्हें अपनी जड़ें मिल जाती हैं; यानी उनकी "घर वापसी" की गुंजाइश बनी रहती है। इस कारण इफिसियों 6:3 की सच्चाई उनके लिए सार्थक हो जाती है; जब वे स्नेह भरे घर में वापस आएं तो उन्हें सचमुच पता चलेगा कि उनके साथ सब कुछ "सही" *है* ।

सम्मान (5:21, 28, 33; 6:2, 4)

जिन वचनों का हम अध्ययन कर रहे हैं, उनका आरम्भ सम्मान की अवधारणा ("मसीह के भय में") से होता है, और समाप्ति सम्मान के लिए आज्ञा ("और पत्नी इस बात का ध्यान रखे कि पति का सम्मान करना है") से। 5:21 में "भय" शब्द एक संज्ञा है और 5:33 में "आदर" शब्द एक क्रिया, परन्तु यूनानी में दोनों ही एक ही मूल शब्द से निकले हैं जिसका अर्थ "सच्चे दिल से आदर" है।[6]

इफिसियों 5:21-6:4 में आदर विशेष रूप से तीन सम्बन्धों में बताया गया है: सब प्रभु का आदर करें (5:21),पत्नियां अपने पतियों का आदर करें (5:33), और बच्चे अपने माता-पिता का आदर करें (6:2)। घर में *सभी* सम्बन्धों में आदर होना आवश्यक है: पति "अपनी पत्नी से *अपने समान* प्रेम रखे" (5:33), जिसका अर्थ पत्नी से प्रेम करना है। पिताओं से कहा गया है, "अपने बच्चों को रिस न दिलाओ" (6:4क) जिसका अर्थ अपने बच्चों का आदर करना है।

मसीहियों के रूप में, अपने घरों में दूसरों का आदर करने का हमारे पास हर कारण है कि हमें एक-दूसरे का आदर करना चाहिए। यदि हमारे साथ काम करने वाले और लोग मसीही हैं, तो हमें मसीह में अपने भाइयों और बहनों का आदर करना चाहिए। मेरी सबसे छोटी बेटी एंजी नौ वर्ष की छोटी सी उम्र में मसीही बन गई थी। जब वह पानी से बाहर आई तो मैंने उसके गीले, कांपते हुए शरीर को बाहों में ले लिया, उसका और मेरा अब एक नया रिश्ता बन गया था। अब रोपर परिवार में हमारा रिश्ता बाप/बेटी का ही नहीं, बल्कि प्रभु के परिवार में भाई-बहन का भी है।

एक-दूसरे का आदर करने वाले परिवार के लोग अद्‌भुत बात है: पति अपनी पत्नियों का मज़ाक नहीं उड़ाते, पत्नियां अपने पतियों की अक्षमता पर हंसती हैं, और माता-पिता अपने बच्चों को मूर्ख समझते और बच्चे स्नेही माता-पिता से विनम्रता से बात करते और उनका आदर करते हैं।

सारांश

परमेश्वर को कैसा घर भाता है ? यह नि:स्वार्थ, भय ज़िम्मेदारी, पवित्रता, विकास,

टिकाऊपन और आदर का स्थान है। यदि हम ऐसे घर चाहते हैं तो हम में से हर किसी को वह करना होगा जो वह कर सकता/सकती है। हम में से *हर किसी को* वैसा बनना होगा जैसा उसे होना चाहिए।

एक बार, जब मैंने ऐसे एक विषय पर बोला तो बाद में एक स्त्री ने मेरे पास आकर कहा, ''क्या आज का संदेश किसी ने टेप किया? मुझे एक अपने पति के लिए चाहिए! मैं घर जाकर उन्हें सुनाऊंगी!'' यह बात आप पति/पत्नी या बच्चों के लिए अच्छी हो भी सकती है और नहीं भी। परन्तु यह *आप* की सहायता कर सकती है, अपने आप से पूछें, ''अपने घर को बेहतर बनाने के लिए मैं क्या कर सकता/सकती हूं? अपने परिवार में सम्बन्ध बनाने के लिए मैं क्या कर सकता/सकती हूं?'' यदि आप मसीही नहीं हैं तो पहला कदम आपके लिए यह उठाना आवश्यक है कि परमेश्वर की संतान बनें (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38)। यदि आप अविश्वासी मसीही हैं तो पहला कदम प्रभु और उसकी कलीसिया में आना होगा (प्रेरितों 8:22; याकूब 5:16), यदि आप ने अभी आज्ञा नहीं मानी है तो अभी समय है।[7]

टिप्पणियां

[1]ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट एपिस्टलस, सं. जे. डब्ल्यू.शैफर्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1960), 4:117 में डेविड लिप्सकोम्ब, ''इफिशियंस, फिलिपियंस एंड कोलोशियंस।'' [2]मुझे तेज़ गति से गाड़ी चलाने से मना करने वाला पुलिसकर्मी मुझ से श्रेष्ठ नहीं हो जाएगा और न मैं उससे हीन; परन्तु स्थिति में उसका मुझ पर अधिकार होगा (रोमियों 13:1)। श्रेष्ठता या हीनता या परमेश्वर के प्रबन्ध की किसी बात से बाइबल के अधिकार का कोई सम्बन्ध नहीं है। [3]विलियम बार्कले, *द लैटर्स टू द गेलेशियंस एंड इफिशियंस,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़ (फिलाडेल्फिया: वेस्टमिंस्टर प्रैस, 1976), 168–71. [4]वही। [5]वही,. 173. [6]KJV में 5:33 में "reverence" है। [7]विवाह और परिवार के विषय पर बोलते हुए मैं यह बुनियादी निमन्त्रण देता हूं। घर पर बोलते हुए मैं हमेशा यह ज़ोर देता हूं कि यह *मसीही* घर ही होना चाहिए, जिसका अर्थ है कि घर का हर एक सदस्य विश्वासी मसीही हो। फिर मैं सबको बताता हूं कि मसीही कैसे बनना है या विश्वास में वापस कैसे आना है, और मेरी बात मानने का आग्रह करता हूं।